

पारंपरिक व्यंजनो, शर्बतों और वनौषधियों से होती है पथरी की पारंपरिक चिकित्सा

* 180 प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक प्रयोग

* 65 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की अब तक पहचान

नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ की वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य में पथरी की चिकित्सा में पारंपरिक चिकित्सक 180 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। इन वनौषधियों का उपयोग मिश्रण के रूप में होता है। सर्वेक्षणों के माध्यम से अब तक 65 ऐसे पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है जो कि पथरी के उपचार के विशेष दक्षता रखते हैं।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में पिछले दस वर्षों से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि राज्य की जिन वनौषधियों का प्रयोग वृक्क की पथरी को निकालने में होता है उनमें से अधिकतर वनौषधियों के पौध भाग वृक्काकार होते हैं। पारंपरिक चिकित्सकों का मानना है कि वृक्काकार आकार प्रकृति द्वारा इस रोग विशेष के लिये बनाये जाने को इंगित करता है। वृक्काकार पत्तियों वाली वनौषधि मुश्कैनी का प्रयोग छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। यह वनौषधि खरपतवार के रूप में धान के खेतों व बेकार जमीनों में उगती है। इसे पथरी के इलाज में ‘‘गरीबों का साथी’’ की उपमा मिली हुई है। मुश्कैनी की साग ग्रामीण अंचलों में चाव से खायी जाती है। राज्य के बहुत से हिस्सों में कुल्थी नामक वनौषधि की खेती दाल वाली फसल के रूप में होती है। कुल्थी की दाल का सेवन आम लोगों में लोकप्रिय है। उनका मानना है कि पथरी के रोगियों के लिये ये दाल विशेष रूप से उपयोगी है। पारंपरिक चिकित्सक भी इससे काफी हद तक सहमत हैं पर उनका मत है कि इस दाल के साथ अन्य भोज्य पदार्थों का सही चयन सही उपचार में अहम भूमिका निभाता है। वे अधिक मात्रा में इस दाल के उपयोग के पक्षधर नहीं हैं। साथ ही शिलाजीत जैसी औषधियों के साथ इसका सेवन वर्जित है। नयी फसलों के कारण अब राज्य में कुल्थी की फसल का रकबा कम हो रहा है। जैविक विधियों से उगाई गई कुल्थी का प्रयोग ही पारंपरिक चिकित्सा में होता है। राज्य के पारंपरिक चिकित्सक पथरी निकालने के बाद भी रोगियों की लंबे समय तक चिकित्सा के पक्षधर हैं ताकि पथरी का निर्माण दोबारा न हो। रोगी को पेयजल को वनौषधियों से उपचारित कर पीने की सलाह ज्यादातर पारंपरिक चिकित्सक देते हैं क्योंकि उनका मानना है कि पानी और भोजन काफी हद तक इस समस्या के लिये उत्तरदायी है। पारंपरिक चिकित्सकों के बीच वनौषधियों से तैयार शर्बत भी लोकप्रिय है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक रोगियों को लंबे समय तक मौलश्री के फलों का शर्बल पीने की सलाह देते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक मुनगा (सहजन) की जड़ों से तैयार काढ़े के प्रयोग के पक्षधर हैं। काढ़े का प्रयोग वे अपनी निगरानी में करवाते हैं। कांकेर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच पानफूटी नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। इसके पौध भागों विशेष कर पत्तियों से स्वादिष्ट चटनी तैयार कर रोगियों को दी जाती है। बिलाड़ी क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक वनों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनौषधि कोरिया का प्रयोग करते हैं। इसकी छाल को दही के साथ और जड़ को काढ़े के रूप में दिया जाता है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि बहुत सा पारंपरिक ज्ञान अभी भी दूरस्थ क्षेत्रों में प्रचलन में है और इसका सही मायने में दस्तावेजीकरण नहीं हो पाया है। पथरी की चिकित्सा के महारथी अब बड़े शहरों और विदेशों में लोकप्रिय होने लगे हैं। दूर - दूर से आने वाले रोगियों की बढ़ती भीड़ इसका स्पष्ट प्रमाण है। पंकज अवधिया का मानना है कि आधुनिक शोध के माध्यम से इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर इसे सदा के लिये प्रमाणिक बनाया जा सकता है।